3

यूहन्ना ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया

''यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था'' (मरकुस 1:4)।

यूहन्ना द्वारा सिखाया और दिया जाने वाला तैयारी का बपतिस्मा बिना सोचे-समझे आज्ञा मानने, अर्थात संकेत या बिना समझ और वचनबद्धता के खोखला धार्मिक संस्कार *नहीं* बल्कि यह बपतिस्मा उन लोगों के लिए था जो इसके उद्देश्य और अर्थ को समझते थे।

परमेश्वर के महान सेवक, यूहन्ना (मत्ती 11:11), का जन्म जकर्याह याजक और उसकी पत्नी इलीशिबा के घर बुढ़ापे में हुआ था (लूका 1:5-7, 57)। वह अपने रिश्तेदार यीशु से छह महीने बड़ा था (लूका 1:36)। यूहन्ना ने यीशु के बपतिस्मा लेने और उसकी सेवकाई (लूका 3:21-23) के आरम्भ होने से छह माह पहले लगभग तीस वर्ष की आयु में यरदन नदी के पास यहूदिया के जंगल में प्रचार करना आरम्भ किया (मरकुस 1:4, 5)।

यूहन्ना के मिशन तथा बपतिस्मे को (1) उसके काम सम्बन्धी भविष्यवाणी, (2) उसके प्रचार और (3) लोगों द्वारा बपतिस्मा लेकर उसे मानने के अध्ययन से देखा जा सकता है।

यूहन्ना के बारे में भविष्यवाणी

यशायाह ने यूहन्ना के बारे में लिखा कि वह प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए जंगल में पुकारने वाले की आवाज़ होगा (यशायाह 40:3; मत्ती 3:3 में उद्धृत; लूका 3:4; यूहन्ना 1:23)। मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि वह प्रभु के लिए मार्ग तैयार करने वाला परमेश्वर का संदेशवाहक होगा (मलाकी 3:1; तु. मत्ती 11:10; लूका 1:76; 7:27)। उसने कहा कि यह भविष्यवक्ता ''माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि [प्रभु] आकर पृथ्वी को सत्यानाश करे'' (मलाकी 4:5, 6; तु. लूका 1:17; मत्ती 11:14; 17:10, 11; मरकुस 9:11-13)।

यूहन्ना के जन्म से पूर्व, जिब्राइल स्वर्गदूत ने जकर्याह को बताया ''और [वह] इस्राएलियों में से बहुतेरों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा। वह एलिय्याह की आत्मा

और सामर्थ में होकर उसके आगे-आगे चलेगा, कि पितरों का मन लड़केबालों की ओर फेर दे; और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए; और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे'' (लूका 1:16, 17; तु. मलाकी 4:6)। यीशु ने यूहन्ना को आने वाला एलिय्याह कहा था (मत्ती 11:11-14; 17:11-13)। यूहन्ना पुराने नियम का एलिय्याह नबी नहीं था (यूहन्ना 1:21); बल्कि वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में आया था (लूका 1:17)।

स्पष्टतया, यूहन्ना का काम आने वाले प्रभु की तैयारी के लिए इस्राएल के लोगों से अपने जीवनों को सुधारने का एक आग्रह करना था (मलाकी 3:1)।

यूहन्ना का प्रचार

यूहन्ना का संदेश था कि ''मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है'' (मत्ती 3:1, 2)। उसकी सेवकाई में ''पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा'' दिया जाता था (लूका 3:3)।

यूहन्ना ने बिना सोचे-समझे उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे लोगों को सांप के बच्चे कहकर डांट लगाई और कहा था कि वे अपने जीवनों में पश्चात्ताप का फल दिखाएं (लूका 3:7, 8)। उसके पास आकर बपतिस्मा लेने वालों से उसने बिनती की कि वे आने वाले मसीहा के लिए, जिस पर उन्होंने विश्वास करना था, अपने जीवनों को बदल डालें (प्रेरितों 19:4)। वह यीशु के मसीह होने की गवाही देने के लिए बपतिस्मा देने आया (यूहन्ना 1:31-34), यह गवाही वह आत्मा के यीशु पर शारीरिक रूप से कबूतर की नाईं उतरता देखने के बाद दे सकता था (लूका 3:21, 22)।

यूहन्ना ने सिखाया कि वह न तो एलिय्याह है और न ही मसीह जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे (यूहन्ना 1:20, 21)। उसने अपने आपको केवल मसीह के लिए जिसने उससे बड़ा होना था मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया संदेशवाहक बताया। उसने कहा कि मसीह वह करेगा जिसे न तो यूहन्ना और न ही कोई और कर सका अर्थात वह पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा (लूका 3:16, 17)।

जिन्हें यूहन्ना ने बपतिस्मा दिया

यूहन्ना का बपतिस्मा लेने आए लोग अपने पापी होने को मानते थे, क्योंकि वे अपने किए गए पापों को मान रहे थे (मरकुस 1:5)। उन्होंने राज्य के निकट होने के संदेश को स्वीकार किया, उस पर विश्वास किया जिसके आने की बात यूहन्ना ने कही, अपने पापों से मन फिराया और यूहन्ना द्वारा की गई प्रतिज्ञा से शुद्ध होने की इच्छा की। अपने पाप मानकर (मत्ती 3:6) और यह पूछकर कि क्या करें (लूका 3:10-14) उन्होंने संकेत दिया कि वे यूहन्ना के संदेश के अनुसार अपने जीवन बदलना चाहते हैं। बपतिस्मा लेकर उन्होंने प्रमाणित कर दिया कि वे यूहन्ना के संदेश की बातें मान रहे हैं।

जो बातें यूहन्ना ने उन्हें करने के लिए बताईं वे इस बात का प्रमाण हैं कि वह बपतिस्मे

को केवल शारीरिक रूप से मानने की ही मांग नहीं कर रहा था बल्कि अपने संदेश को अर्थपूर्ण ढंग से मानने के लिए उनके मन फिराने और बपतिस्मे की इच्छा भी कर रहा था (लूका 3:3; प्रेरितों 13:24)।

यूहन्ना का मिशन

यूहन्ना क्या करने की कोशिश कर रहा था? क्या उसका एकमात्र उद्देश्य लोगों को बपतिस्मा देना था? क्या वह उनसे केवल यह प्रमाणित करवाना चाहता था कि बपतिस्मा लेकर वे परमेश्वर में विश्वास को दिखाएं। क्या उन्हें केवल यही प्रमाणित करना था कि वे परमेश्वर की आज्ञा मानने को तैयार हैं? क्या उनके बपतिस्मे से यह पता चला कि उनके पाप क्षमा हो गए हैं ताकि वे एक धार्मिक संगठन बना लें या परमेश्वर के कार्य के लिए अपने आपको समर्पित कर दें? क्या उनके बपतिस्मे में उनके पापों को धोने की शक्ति थी चाहे वे उसे न ही समझते हों और न ही उनका मन बदला हो?

यूहन्ना के बपतिस्मे के लिए धार्मिक संस्कार से ऊपर उठकर कुछ करना आवश्यक था। यूहन्ना के बपतिस्मे को हल्के ढंग से लेने वालों ने परमेश्वर की युक्ति को भी हल्के ढंग से ही लिया, क्योंकि उसके बपतिस्मे को ठुकराने वालों ने ''बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर की मंशा को अपने विषय में टाल दिया'' (लूका 7:30)। दूसरे लोगों ने यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर को धर्मी ठहराया (लूका 7:29)। सही ढंग से समझकर और आज्ञा मानने से लिया गया बपतिस्मा, मनुष्य की आज्ञा को *नहीं* बल्कि परमेश्वर की आज्ञा को मानना है। जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा *नहीं* लिया वे मनुष्य की युक्ति को नहीं, बल्कि परमेश्वर की मंशा को ठुकरा रहे थे। उन्होंने परमेश्वर की शर्त, अर्थात पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे को नहीं माना।

यूहन्ना के बपतिस्मे का परिणाम

खोखले धार्मिक संस्कार का परिणाम उद्देश्यपूर्ण मन में होने वाले सुधार से अलग है। यूहन्ना के प्रचार को मानकर केवल बपतिस्मा लेने से मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता था। किसी समारोह में समर्पण करने से, ज़रूरी नहीं कि किसी का जीवन बदल ही जाए।

यूहन्ना ने लोगों को मन फिराव की ओर लाने के प्रयास में प्रचार किया था। उनका मन फिराव बपतिस्मा लेने से नहीं बल्कि प्रचार से हुआ था (मत्ती 12:41), और मन फिराव से ही उन्हें बपतिस्मा लेने की प्रेरणा मिली। मन फिराने वालों ने उसके बपतिस्मे की बात मान ली। जिन्होंने मन नहीं फिराया उन्होंने उसका बपतिस्मा नहीं माना या मन न फिराने के कारण उसका बपतिस्मा लेने से इन्कार कर दिया था।

जब फरीसी और सदूकी उससे बपतिस्मा लेने के लिए आए परन्तु मन नहीं फिरा रहे थे, तो यूहन्ना ने उन्हें भला बुरा कहा (मत्ती 3:7-9)। यदि वह परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए उनसे केवल बपतिस्मा लेने की इच्छा ही करता, तो वे उसे स्वीकार कर लेते। परन्तु वह केवल बपतिस्मा ही नहीं बल्कि उनसे मन फिराव की भी इच्छा कर रहा था जिससे

उनका बपतिस्मा लेना भी जुड़ा हुआ था ताकि उनके पाप क्षमा हो जाएं (लूका 3:3)।

यूहन्ना से बपतिस्मा लेने वाले लोग मन फिरा रहे थे; मन फिराने के कारण, बपतिस्मा लेने पर उनके पाप क्षमा हो जाने थे। पापों की क्षमा मन फिराने और बपतिस्मे दोनों पर आधारित थी, क्योंकि यह पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का बपतिस्मा था।

बहुत से लोगों ने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया और उसके अनुयायी बन गए (मत्ती 9:14; यूहन्ना 1:35; 3:25; 4:1)। उसका लक्ष्य यीशु से अधिक चेले बनाना नहीं बल्कि यीशु के अनुयायी बनाने के लिए अपने अनुयायियों को तैयार करना था। उसने अपने चेलों को बताया कि यह जरूरी है कि यीशु बढ़े परन्तु वह घटे, जिससे उसका आनन्द पूरा हो (यूहन्ना 3:25-30)।

प्रेरित अन्द्रियास (यूहन्ना 1:35, 40) और शायद पतरस सहित यूहन्ना के बहुत से चेले यीशु के अनुयायी बन गए। कुछ को तो जिन्होंने यूहन्ना का बपतिस्मा पाया था यह पता चलने पर कि यूहन्ना यीशु के बपतिस्मे की ओर संकेत करता था, बाद में यीशु का बपतिस्मा दिया गया था (प्रेरितों 19:1-5)।

सारांश

यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की आज्ञा बिना कुछ पूछे मानने के कार्य के लिए कोई धार्मिक संस्कार नहीं था। यूहन्ना का बपतिस्मा उनके लिए था जिन्होंने (1) अपने पाप मान लिए थे, (2) अपने पापों से मन फिरा रहे थे, (3) अपने पापों की क्षमा की खोज में थे, (4) मसीह के विषय में निर्देश को मान रहे थे जिसने थोड़ी देर बाद ही प्रकट हो जाना था और (5) मसीह के आने वाले राज्य की तैयारी में धर्मी जीवन बिताने का निश्चय कर रहे थे। यूहन्ना का बपतिस्मा खोखला धार्मिक संस्कार या निरर्थक औपचारिकता नहीं थी। यूहन्ना को बपतिस्मा लेने आने वालों के लिए उसकी समझ होनी आवश्यक थी ताकि वे इसे सही उद्देश्य और मन की सच्चाई से ले सकें।